झारखंड प्रदेश के लिये कृषि वानिकी-एक रोजगारपरक व्यवसाय

कुमार राजेश रमण एवं डा0 कृष्णमोहन

सस्य विज्ञान एवं कृषिवानिकी, बिहार कृषि महाविद्यालय , सबौर, भागलपुर ।

झारखंड प्रदेंश एक खनिज सम्पदा एवं वन सम्पदा से परिपूर्ण आदिवासी बहुल राज्य है । इस राज्य में वर्षा पर्याप्त मात्रा (1379.2मी0मी0 औसतन प्रतिवर्ष) होती है । परन्तू भूमि के ढालवां होने तथा मिट्टी की संरचना हल्की होने के कारण वर्षा का जल खेतों में संचयित नहीं हो पाता है तथा शीध्र ही मिट्टी में नमी की कमी हो जाती है । झारखंड राज्य के 29.8 प्रतिशत भू–भाग में वन अवस्थित है और लगभग इतने ही बड़ें कृषि योग्य भू–भाग का सामयिक उपयोग नहीं हो पा रहा है । इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है , कि राज्य के कुल भू–भाग का लगभग 3.5 प्रतिशत ऐसे खेत है ं जिनमें पॉच या अधिक वर्षो से खेती नहीं हुई है, लगभग दस प्रतिशत खेत ऐसे हैं जिनमें किसान की संसाधन सम्पन्नता में कमी के कारण पिछले पॉच वर्षा से यदाकदा ही खेती की गयी है , जबकि पिछले वर्ष लगभग 16.5 प्रतिशत खेत योहिं बिना कृषि कार्यो के छोड दिये गये है । प्रदेश के बहुत से क्षेत्रों में सिंचाई साधनों के कमी के कारण वर्ष भर में वर्षा पर आधारित मात्र एक फसल उगाया जाता है । खेतों को खाली छोड़ने या खेतों में तीन फसल जगह मात्र एक या दो फसल उगाने के कारण राज्य में रोजगार के अवसर कम पैदा होते हैं । इस कारण ग्रामीण विशेषकर युवक एवं युवतियॉ रोजगार की तलाश में शहरों तथा दूसरे राज्यों की तरफ पलायन करते है। ग्रामीणों के पलायन को रोकने तथा उनको आत्मनिर्भर बनाने में कृषिवानिकी का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है ।

कृषि वानिकी भूमि प्रबंधन की ऐसी पद्वति है, जिसके अन्तर्गत एक ही भूखंड पर कृषि फसलों, बहुउद्येशीय पेड़ों /झाड़ियों व चारा वाली घासों के उत्पादन के साथ–साथ पशुपालन एवं अन्य व्यवसाय(मधुमक्खी पालन, रेशम कीट पालन, लाख उत्पादन, वायोडीजल उत्पादन आदि) किये जाते है। कृषि वानिकी से अन्न, फल, ईंधन, लकडी, चारा, मांस, दूध, शहद, रेशम, लाख, वायोडीजल इत्यादि की आपूर्ति के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के लधुउद्योगों /कुटीर उद्योगों (काष्ठ उद्योग, माचिस उद्योग, प्लायउड उद्योग, कागज उद्योग, औषधि उद्योग, पत्तल उद्योग आदि) के लिये कच्चा माल प्राप्त होता है । राज्य की बढती मानव एवं पशुधन संख्या, खेती योग्य भूमि का भरपूर उपयोग नहीं होने, कम रोजगार के अवसर प्राप्त होने, काष्ठ की मांग एवं आपूर्ति में ज्यादा अन्तर होने, पारिस्थितिक असंतुलन एवं पर्यावरणीय प्रदूषण को ध्यान में रखते हुए झारखंड में कृषि वानिकी को बढवा देना आवश्यक हो गया है ।

कृषि फसलोत्पादन से संबंधित कार्य निश्चित अवधि तक ही सीमित होता है। एक फसल तैयार होने के बाद दूसरी फसल की बोआई तक ग्रामीणों को खाली रहना पड़ता है । झारखंड के बहुत से भागों में वर्ष भर में वर्षा पर आधारित मात्र एक फसल उगाने के कारण ग्रामीणों को दूसरे प्रदेशों की तूलना में ज्यादा अवधि तक खाली रहना पडता है । लेकिन कृषिवानिकी के प्रबंधन में दो फसलों के बीच के खाली समय को उपयोग में लाया जा सकता है। इस खाली समय सदउपयोग से ग्रामीणों को वर्ष भर रोजगार का अवसर मिल सकता है । माहवार कृषिवानिकी की विभिन्न गति विधियों को सारणी–1 में प्रस्तुत किया गया है । इसके अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कृषिवानिकी पद्वति को अपनाने से ग्रामीण क्षेत्रों में सालोभर रोजगार के अवसर पैदा किये जा सकते है ।

सारणी : 1. सालोभर जारी रहने वाली कृषिवानिकी गतिविधियॉ (माहवार कृषिवानिकी के कार्यो का विवरण)

Ekkg	Ilse{kk dk fo'ks"kokfudh xfrfof/k;kWa ,oa fooj.k
fnlEcj&tuojh	• ‘kh"ke] lkxoku][kSj];wdfyIVl]cjxn]vkoyk bR;kfn dscht ,df=r djsa] [kk;s,oa lw{e iks"Vkeaj[ksaA • Ikkiyj dsbZVh0ih0 dks[ksrkaeayxk;sA • fnlEcj ekg eao{kkaeadkV NkWV dk dk;Z djsarFkk mlls ikIr ifRr;kadkspkjk ds:Ik ea,oaydMh dksbZa/ku ds:Ik eami;kx djsaA • Qyinkj o{kkat Sls vkoyk]cjs vkfn dsQykadksrksMsaA
Qjojh&ekpZ	• ‘kh"ke][kSj]cjs] vkoyk]cdSu]djat]beyh] vtZqu]vkdk'keuh]lkxoku bR;kfn dscht ,df=r dj HkaMkfjr djsaA • ikS/k'kkyk easvko';drkuqlkj [kkn ,oafeVVh feykdj ikWyhFkhu esaHkjsarFkk ikS/k'kkyk dh D;kfj;kWa cuk;sA • ikS/k'kkyk ea[kSj]cdSu]vkoyk];wdfyiVl vkfn dscht cks;sA • >kfM+;ksdh lQkbZ dk dk;Z djsaA • Qjojh ekg eaikiyj dsbZVh0ih0 dks[ksrkaeayxkusdk dk;Z lEiUu dj ysaA • Qyinkj o{kkadh dVkbZ@Nkaafj;ksl scpko gsrq vko';drkuqlkj jlk;ukadk fNMdko djsaA • cjs ds Qykadh rksMkbZ dj fcdh djsaA • Qjojh ekg eadqN rFkk vkdk'keuh dh dkV NkWV yk[k dh vxguh Qly ysusgsrqdjsaA blh izdkj iykl ,oacsj dsi sMksa dh dkV NkWV yk[k dsdrdh Qly gsrqdjsaA • vkoyk dsQykal seqjCck ,oavkpkj cuk;sA
vizSy&ebZ	• djat] beyh] vtZqu] lsey] fljhl] dpuk] lgtu] csy] xEgkj bR;kfn dscht ,df=r dj HkaMkfjr djsaA

	• ikS'kkyk esa vkdk'keuh] beyh] xEgkj] fljhl] dpukj] lsy] cdS]vtqZ] [kS] csj] csy] 'kh'ke] lkxoku bR;kfn ds cht cks;sA • ; g le; ikS/kk yxkus gsrq xM<s [kksnus ds fy, cgqr vPNk gSA vke yhph dVgy ,oa vkoyk yxkus ds ikS/kk yxkus gsrq 90 x 90 x 90 lseh0 rFkk vU; ikS/kk gsrq 60 x 60 x 60 lseh0 vkdkj ds xM<s [kksns dj NksM nsaA • viSy eghus esa iykl ,oa csj dh dkV NkWV yk[k dh cSlk[kh Qly ds fy, djsA dkVh x;h ydMh dks bZa/ku @ckM+ ds :i esa mi;ksx djsaA • igys ls yxs ikS/kksa ds Fkkyksa esa ;fn miyC/k gks rks flapkbZ djsaA
Tkwu & tqykbZ	• dVgy lgrwr egqvk tkequ dVgy uhe ccwy [kSj djat xEgkj bR;kfn ds cht ksa dks ,df=r dj ikS'kkyk esa yxk;sA • ikS/kksa dks vU;= ys tkus ds fy; s mUgsa m[kkM dj Nk;k esa j[kus dh O;oLFkk djsaA • ekulwu dh ckfjl 'kq gksus ij vUrjorhZ Qly yxk;sA • ikS'kkyk esa vko';drkuqlkj ikuh ns,oa [kjirokj fudkysaA • tw ds vkf[kjh lIrkg rd [ksrksa esa x;s xM<ksa esa nks Vksdjh xkscj dh [kkn] nks fdyks xzke djat @ uhe dh [kYyh] ,क किलोग्राम gMMh dk pwkZ@fl axy lqij QkLQsV ,oa i ahyhZ ls cph xkse Q;wjkMkW dks lrg dh mijh feVVh esa feykdj Hkj nsaA • o'kkZ ikjEHk gksus gh feVVh dks vPNh rjg lery djds fpfUgr LFkku ij ikS/kksa ds fi.M ds vkdkj dk LFkku cukdj ikS/ks yxk;s xA bl ds बाद मिट्टी को अच्छी तरह दबा दे और आवश्यकतानुसार पानी देते रहे ।

	• फलदार वृक्षों में आवश्यकतानुसार कीटों /बिमारियो के रोकथाम हेतु दवाईयों का छिडकाव करें । • आम, लीची, जामुन, कटहल इत्यादि वृक्षों से फलों की तोडाई कर बिक्री करें । • कुसूम एवं आकाश्मनी के पेडों की काटछाट लाख के जेठरी फसल हेतु करें ।
अगस्त –सितम्बर	• नये रोपे गये पौधों के पास प्रथम निकोनी का कार्य करें तथा तीस ग्राम प्रति पौधा की दा से डालें । • मृत पौधों के स्थान पर नये पौधों को लगाये । • फलदार वृक्षों में आवश्यकतानुसार कीटों /बिमारियो के रोकथाम हेतु दवाईयों का छिडकाव करें । • अगस्त माह के अंत तक पौधा लगाने का कार्य अवश्य सम्पन्न कर लें ।
अक्टूवर –नवम्बर	• सूबबूल के पुराने क्षेत्रों मं शाखाओं की छंटाई कर अन्तरव र्ती फसल लगाये । • अमरूद, नीबू ,संतरा आदि फलों की तोडाई कर बिक्री करें । • पौधशाला में रखें हुए पौधों का देखरेख करें । • बागवानी वाले खेतों की सफाई करें । • रंगीनी लाख से बैशाखी फसल लेने हेतू बीजा लाख को अक्टूबर माह में पेडों पर बॉधे ।

इस प्रकार कृषि वानिकी गतिविधियों के द्वारा राज्य के कृषक स्वाबलंबन की ओर उन्मुख होकर अधिक आर्थिक लाभ के भागीदार होंगें तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के ज्यादा से ज्यादा अवसर पैदा कर सकेंगें एवं राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में अपना योगदान दे सकेंगें ।